Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

कुमाऊँ का विशिष्ट लोकनाट्य - रामलीला

REETA PANDEY[1] & DR. GAGANDEEP HOTHI[2]

[1]Research Scholar, Department of Music, D.S.B. Campus, Kumaun University, Nainital, Uttarakhand

[2]Assistant Professor, Department of Music, D.S.B. Campus, Kumaun University, Nainital, Uttarakhand

शोध सार

"रामलीला" को लोकनाट्य के रुप में पूरे भारत वर्ष में विशेष ख्याति प्राप्त है। 'एकता में अनेकता' भारतीय संस्कृति की इस विशिष्टता के कारण यह लोकनाट्य भारत के अनेक राज्यों में अलग-अलग शैली में विद्यमान है। लोक साहित्य को मुख्यतः सात भागों में विभाजित किया जा सकता है- 1. लोकगीत, 2. लोकगाथायें, 3. लोककथायें, 4. कहावतें, 5. मुहावरे, 6. पहेलियाँ, 7. लोकनाट्य। उत्तराखण्ड राज्य में लोकनाट्य को गीत-नाट्य प्रधान माना जाता है। इस राज्य के कुमाऊँ मण्डल में पुरुषोत्तम राम की कथा का मंचन हिंदी के साथ-साथ अपनी क्षेत्रीय बोलियों में भी किया जाता है। इस क्षेत्र में लोक तथा शास्त्र का अदभुत संगम देखने को मिलता है। इसकी मुख्य विशेषता वाद्य यंत्रों के साथ रामचरितमानस का पाठ, चैपाइयों का गायन तथा अभिनय है। रामलीला के मंचन में सारे जगत व कालखण्डों का सत्य निहित है, इससे प्रत्येक जनमानस को जीवन की वास्तविकता का ज्ञान होता है। कुमाऊँ में रामलीला का मंचन अनेक रागों व तालों में किया जाता है। इसकी मुख्य विशेषता श्रुति परम्परा के अनुसार इसका एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तानान्तरण होना है। कुमाऊँनी रामलीला में सांगीतिक पक्ष अधिक उजागर है, किन्तु नाट्य के अभाव में इस कला का मंचन करना तालविहीन गीत जैसा प्रतीत होता है। रामलीला में प्रभु राम से जुड़े सभी वृत्तान्तों का नाट्य रुप में प्रदर्शन किया जाता है। प्रस्तुत शोध में लोकनाट्य रामलीला का एतिहासिक विवरण व कुमाऊँ के अल्मोड़ा व नैनीताल जिले की रामलीला का उल्लेख किया गया है। इस शोध कार्य में रामलीला में गायी जाने वाली चैपाई के सांगीतिक पक्ष (स्वरलिपि व ताल) पर प्रकाश डाला गया है।

उद्देश्य - कुमाऊँनी लोकनाट्य 'रामलीला' के सांगीतिक पक्ष का अध्ययन करना।

मुख्य शब्द - लोकनाट्य, नाट्यशास्त्र, कुमाऊँ, रामलीला, चौपाई, स्वरलिपि।

कुमाऊँ में रामलीला मंचन का इतिहास

कुमाऊँ की रामलीला का वर्णन करने से पूर्व यहाँ पर नाट्य का उल्लेख करना इस लेख को समझने हेतु उपयुक्त होगा। भरतकृत "नाट्यशास्त्र" नाट्य के विषय पर लिखा गया महत्वपूर्ण ग्रंथ है। नाट्यशास्त्र में यह उल्लेख है कि 'ऋग्वेद' से 'पाठय', 'सामवेद' से 'गीत', 'यजुर्वेद' से 'अभिनय' और 'अथर्ववेद' से 'रस' लेकर 'नाट्य' की रचना हुई है। पाठय, गीत, अभिनय और रस यही चार तत्व नाट्य में माने जाते हैं। इसमें अभिनय तत्व नाट्य में विशेष स्थान रखता है। अभिनय के चार प्रकार कहे गये हैं- 1. आंगिक, 2. वाचिक, 3. सात्विक और 4. आहार्य। नाट्य के संदर्भ में भरत मुनि ने अपने "नाट्यशास्त्र" में कहा है कि कोई एसा ज्ञान, शिल्प, विद्या, कला, योग या कर्म नहीं है जो नाटकों में न दिखाई दे

"न तदज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला।

न स योगो न स तत्कर्म नाट्येस्मिन यन्न दृश्यते"॥ (1,113)[2]

(संकलक- गर्ग लक्ष्मी नारायण, निबन्ध संगीत, पृष्ठ-131)

नाटक का लक्ष्य ही लोकवृत्त का अनुकरण है। त्रैलोक्य के भावों का अनुकीर्तन ही नाटक का विशिष्ट उददेश्य है-

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

त्रैलोक्यस्यास्य सर्वस्यं नाट्यं भावानुकीर्तनम"।[3]

(संकलक- गर्ग लक्ष्मी नारायण, निबन्ध संगीत, पृष्ठ-131)

कुमाऊँ में रामलीला का जो चलन है, वह पूरी तरह लोक पक्ष पर आधारित है। यहाँ पर कुमाऊँनी रामलीला का अपना मिजाज है। सन 1957 में उत्तराखण्ड सांस्कृतिक विकास अधिकारी के पद पर रहते हुए रंगकर्मी स्व. ब्रजेन्द्र लाल शाह ने लोक धुनों के आधार पर रामलीला गीत नाटिका की रचना की थी। इन्होंने लोक गीतों की दर्जनों धुनों को टेप रिकार्डर पर संरक्षित किया। इन्हीं धुनों का वर्गीकरण कर इन्होंने कुमाऊँनी रामलीला तैयार की। जिसे रामलीला कमेटी दरकोट, मुनस्यारी में सन् 1982 में "श्री रामलीला कुमाऊँनी गीत नाटक" नाम से प्रकाशित किया। यह कार्य कुमाऊँनी संस्कृति व साहित्य को विरासत के रूप में सहेजने हेतु बहुत महत्वपूर्ण है।[4]

कुमाऊँ में प्रचलित रामलीला का सांगीतिक रूप से विशेष महत्व है। पर्वतीय अंचल की रामलीला में 'रामचरितमानस' की प्रत्यक्ष छाप है। कुमाऊँ के प्रसिद्ध इतिहासकार श्री नित्यानंद मिश्र के अनुसार - "कुमाऊँ की पहली रामलीला का श्रीगणेश अल्मोडा शहर के बद्रेश्वर में स्व. देवीदत्त जोशी जी की प्रेरणा से सन् 1860 में हुआ"।[5] डॉ. त्रिलोचन पाण्डेय के अनुसार - "कुमाऊँनी रामलीला का आरम्भ सन 1860 के आस पास से माना जाता है। सन 1900 से पहले रामलीला केवल कुमाऊँ के अल्मोडा जिले के बद्रेश्वर में होती थी। इसके बाद इसी शहर के अन्य क्षेत्रों जाखन देवी, नंदा देवी, धारानौला, हुक्का क्लब तथा मुरलीमनोहर आदि स्थानों पर यह रामलीला होने लगी"।[6]

नैनीताल निवासी श्री विश्वम्भर नाथ सखा जी ने कुमाऊँ की रामलीला के बारे में लिखा है - "चंद्रवंश के राजाओं के उदभव के बाद भी कला ने नया रूप लिया। सुविधानुसार जन संस्कृति ने नवीन परन्तु उन्नत प्रतीकों को अंगीकार किया। कुमाऊँनी संस्कृति में ये नाट्य प्रतीक आज भी कुमाऊँ को विशिष्ट स्थान प्रदान करने में सार्थक हुए हैं। इसलिए इसमें नवीनता, सौंदर्य कला (ध्वनि और लय) एक साथ दृष्टिगोचर होते हैं"।[7]

नैनीताल क्षेत्र में रामलीला का मंचन

जिस प्रकार प्रत्येक स्थान की बोली में परिवर्तन दिखाई देता है, उसी प्रकार हमारी लोक संस्कृति में भी सूक्ष्म परिवर्तन दिखाई देता है। ऐसा ही परिवर्तन यहाँ के विभिन्न क्षेत्रों में होने वाली रामलीला में दृष्टिगोचर होता है। अर्थात बोली, भाषा, वेशभूषा, गायन शैली तथा रामलीला के मंचन में परिवर्तन होता है। परंतु इन सबका आधार एक ही है।

नैनीताल - सन् 1880 में श्री मोती लाल साह के प्रयास से नैनीताल में रामलीला का प्रारम्भ हुआ। प्रारम्भ में रामलीला का अयोजन तथा प्रबंधन में इनके पुत्र लाला दुर्गा साह, अमर नाथ साह तथा कृष्ण साह की भूमिका मुख्य थी। बाद में मल्लीताल तथा तल्लीताल में अलग-अलग रामलीला होने लगी। प्रसिद्ध रंगकर्मी स्व0 तारादत्त सती के निर्देशन में सन् 1974 में सम्पूर्ण रामायण की प्रस्तुति "गीत नाटक प्रभाग" के कलाकारों ने की।[8]

नैनीताल के श्री कृष्ण साह के अनुसार - रामलीला प्रस्तुति के दौरान कलाकार पूरे हाव-भाव के साथ छंद तथा चैपाईयों को कई रागों में गाकर इसका अभिनय करते हैं। छंद तथा चैपाईयाँ मुख्यतः पीलू, दरबारी कान्हडा, हमीर, बागेश्री, वृन्दावनी सारंग, भैरवी, मालकौंस, कामोद, शिवरंजनी, दुर्गा, बहार, मल्हार, आदि रागों में गायी जाती है।[9]

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

रामलीला का सांगीतिक पक्ष

रामलीला को मुख्य रूप से गीतनाट्य प्रधान माना जाता है। कुमाऊँ की रामलीला में सभी सम्वाद गेय रूप में हैं। इसकी चैपाइयों तथा छन्दों को विभिन्न रागों व तालों में पेश किया गया है। रागों में गाये जाने के कारण यहाँ की रामलीला सम्पूर्ण विश्व में अनूठा स्थान रखती है और साथ ही इस लोकनाट्य के माध्यम से शास्त्रीय संगीत को सहजता से सीखा जा सकता है। यहाँ पर रामलीला मंचन के दौरान राम कैकई के सम्वाद से जुड़ी एक चैपाई की स्वरलिपि तथा ताल चिन्हों का विवरण दिया जा रहा है।

चैपाई (राग-बागेश्री)

राम-कैकई (सम्वाद) - "सुन जननी सोई सुत बड़भागी, जो पितु मातु वचन अनुरागी।

तनय मातु पितु तोश निहारा, दुर्लभ जननी सकल संसारा"।।[10]

अर्थ - हे माता सुनो वही पुत्र बड़भागी है जो पिता माता का अनुरागी पालन करने वाला है। आज्ञा पालन के द्वारा माता-पिता को सन्तुष्ट करने वाला पुत्र, हे जननी सारे संसार में दुर्लभ है।[11]

स्वरलिपि (स्थाई)

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
								सां	-	-	(सां)	सां	-	नि	-
								सु	ऽ	न	ऽ	ऽ	ज	न	ऽ
ध	प	म	-	म	ध	नि	ध	सां	-	-	(सां)	सां	-	नि	-
नी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मो	री	ऽ	सु	ऽ	न	ऽ	ऽ	ज	न	ऽ
ध	प	म	-	म	-	प	म	ग	-	रे	सा	-	रे	सा	-
नी	ऽ	ऽ	ऽ	सो	ऽ	ई	ऽ	सु	ऽ	त	ऽ	ऽ	ब	ड़	ऽ
रे	सा	ऩि	-	सा	-	-	-	सा	ग	रे	सा	ऩि	ऩि	ध़	ऩि
भा	ऽ	ऽ	ऽ	गी	ऽ	ऽ	ऽ	जो	ऽ	ऽ	ऽ	पि	ऽ	तु	ऽ
सा	-	-	-	सा	-	म	-	म	ध	धनिध	म	म	ध	(नि)	ध
मा	ऽ	ऽ	ऽ	तु	ऽ	व	ऽ	च	ऽ	न	ऽ	ऽ	अ	नु	ऽ
म	-	-	-	ग	रे	सा	-								
रा	ऽ	ऽ	ऽ	गी	ऽ	ऽ	ऽ								

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

अंतरा

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
ग	-	मग	ग	ग	-	म	-	ध	-	-	-	नि	-	ध	-
त	ऽ	नऽ	ऽ	य	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ	तु	ऽ	पि	ऽ	तु	ऽ
सां	-	-	-	सां	-	-	रें	नि	-	-	ध	सां	-	-	-
तो	ऽ	ऽ	ऽ	ष	ऽ	नि	ऽ	हा	ऽ	ऽ	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ
								सां	-	-	-	सां	नि	ध	प
								दु	ऽ	र	ऽ	ऽ	ल	भ	ऽ
ग	-	म	-	ग	रे	सा	-	म	-	मग	पम	ग	-	रे	सा
ज	ऽ	न	ऽ	नी	ऽ	ऽ	ऽ	स	ऽ	कऽ	ऽऽ	ल	ऽ	सं	ऽ
ग्	2	0	3												
रे	ऽ	ऩि	ध़	सा	ऽ	ऽ	ऽ								
सा	ऽ	ऽ	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ								

निष्कर्ष

'रामलीला' अखण्ड ज्योति के समान आदि से अनन्त तक प्रज्वलित हैं। इस ज्योति के प्रकाश से आम जनमानस को प्रेरणा मिलती है। इस शोध कार्य के दौरान मुझे यह ज्ञात हुआ कि कुमाऊँ के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों में रामलीला नौटंकी, भाषा-संवाद तथा हाव-भाव के साथ होती है, जबकि कुमाऊँ की रामलीला में नाट्य तत्वों को शास्त्रीय गायन द्वारा प्रस्तुत किया जाता है, जो स्वयं में अद्भुत है।

अल्मोड़ा में रामलीला का गायन कुमाऊँनी बोली में होता है, जो हमारी बोली भाषा के विकास में सहायक है। इसके माध्यम से नयी पीढ़ी का क्षेत्रीय बोली (कुमाऊँनी) के प्रति लगाव व उत्साह बढ़ेगा। इस गायन शैली में अनेक रागों व तालों का संकलन समाहित है। संगीत के विद्यार्थियों के लिए यह अमूल्य खजाना है। इस हेतु सभी संगीत विद्यार्थीयों को रामलीला की चैपाइयों व छंदों से रागों को समझने का प्रयास करना चाहिए और इनका नित्य अभ्यास करना चाहिए।

संदर्भ

1 सम्पादक- शर्मा भुवन, उत्तराखण्ड के लोक नृत्य झोड़ा, चाँचरी, छपेली और छोलिया, पृष्ठ-110
2 संकलक- गर्ग लक्ष्मी नारायण, निबन्ध संगीत, पृष्ठ-131
3 संकलक- गर्ग लक्ष्मी नारायण, निबन्ध संगीत, पृष्ठ-131
4 डॉ. उप्रेती पंकज, कुमाऊँ की रामलीला का अध्ययन एवं स्वरांकन, पृष्ठ-19

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

5 डॉ. उप्रेती पंकज, कुमाऊँ की रामलीला का अध्ययन एवं स्वरांकन, पृष्ठ-10
6 डॉ. उप्रेती पंकज, कुमाऊँ की रामलीला का अध्ययन एवं स्वरांकन, पृष्ठ-11
7 डॉ. उप्रेती पंकज, कुमाऊँ की रामलीला का अध्ययन एवं स्वरांकन, पृष्ठ-10,11
8 डॉ. उप्रेती पंकज, कुमाऊँ की रामलीला का अध्ययन एवं स्वरांकन, पृष्ठ-17
9 श्री साह कृष्ण कुमार, साक्षात्कार के आधार पर, राम सेवक सभा, नैनीताल।
10 सम्पादक- पाण्डे शिव, पारम्परिक कुमाऊँनी रामलीला गीत-नाटिका, प्रस्तुति श्री लक्ष्मी भण्डार (हुक्का क्लब) अल्मोड़ा, पृष्ठ-46
11 टीकाकार - पोहार हनुमान प्रसाद, श्रीमदोगोस्वामी तुलसीदासविरचित, श्री रामचरितमानस, पृष्ठ-378